MR. SPEAKER: The question is :

That in pursuance of Rule 4 (h) of the National Welfare Board for Seafarers Rules, 1963 the members of this House do proceed to elect, in such manner as the Speaker may direct, two members from among themselves to serve as members of the National Welfare Board for Seafarers, subject to the other provisions of the said Rules."

The motion was adopted.

PRASAR BHARATI (BROADCASTING CORPORATION OF INDIA) BILL

EXTENSION OF TIME FOR PRESENTATION OF REPORT OF JOINT COMMITTEE

SHRI SATYENDRA NARAYAN SINHA (Aurangabad): I beg to move:

"That this House do extend upto the last day of the first week of the Winter Session (1979), the time for presentation of the Report of the Joint Committee on the Bill to provide for the establishment of a Broadcasting Corporation for India, to be known as Prasar Bharati, to define its composition, functions and powers and to provide for matters connected therewith or incidental thereto."

MR. SPEAKER: The question is:

"That this House do extend upto the last day of the first week of the Winter Session (1979), the time for presentation of the Report of the Joint Committee on the Bill to provide for the establishment of a Broadcasting Corporation for India, to be known as Prasar Bharati, to define its composition, functions and powers and to provide for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

12·14 hrs.

MOTION OF NO-CONFIDENCE IN THE COUNCIL OF MINISTERS—*contd.*

MR. SPEAKER: We now come to further discussion of the No-Confidence Motion. Shri N. C. Jain—you have got only 2-3 minutes more.

SHRI EDUARDO FALEIRO (Mormugao): On a point of order, Sir. We cannot go on debating a No-Confidence Motion when it is very clear that the Government has lost the confidence of the House.....

MR. SPEAKER: There is no point of order. The matter is before the House.

SHRI EDUARDO FALEIRO: The Government which has clearly lost the confidence of the House is not entitled to remain even for a minute....(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: This very matter is before the House. Don't record.

SHRI EDUARDO FELEIRO: ** (*Interruptions*)

श्री निर्मल चन्द्र जैन (सिवानी) : अध्यक्ष महोदय, मैं कल कह रहा था कि दलबदल बिल लाने की जो बात थी टेक्नीकल कारण से उसे वापस लेने के लिए विवश होना पड़ा । आज दलबदल को खूब प्रोत्साहन दिया जा रहा है। और इसीलिए चव्हाण साहब यह प्रस्ताव लाये हैं । इस लंगड़े अविश्वास प्रस्ताव में बल देने के लिए अब किस्से गढ़े जाने लगे हैं । एक किस्से की अभी चर्चा हुई । इमरजेंसी के दौरान जब लोगों को बन्द किया गया था जेल में तो हमारे में से बहुत से मित्र यह कहते थे कि बिना किसी का ट्रायल हुए बगैर जेल में नहीं बंद करना चाहिए। अभी एक बात आर० एस० एस० के खिलाफ की गई। आर० एस०एस० के खिलाफ रोज विषवमन होता है और वह भी बिना जांच किये हुए होता है।

SHRI AMRIT NAHATA (Pali): You have banned Mizo National Front. Why have you not banned RSS ? Why not ban RSS also ? (*Interruptions*)

श्री निर्मल चन्द्र जैन : किसी ने यदि कदाचित माननीय अमृत नाहाटा को कह भी दिया हो तो उन्होंने आर० एस० एस० का नाम ले दिया। इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता है। एक उन्होंने किस्सा कुर्सी का चित्र बनाया था, और अब वह गढ़ रहे हैं एक सपना कुर्सी का। आर० एस० एस० के विरुद्ध जिसको जो कुछ बोलना हो उसके पहले जांच होनी चाहिए, अदालत में कार्यवाही होनी चाहिए। ऐसे चाहे अब किसी के यहां बोलने से विष ही यहां पर बोया जाता है और इसके परिणाम अच्छे नहीं निकलते हैं।

**Not recorded.

अध्यक्ष महोदय, सब कुछ कहने का मेरा सार किसी के विरुद्ध विष-वमन करना नहीं है, मेरा कहना यह है कि यदि आप हवा बोयेंगे तो आंधी काटेंगे। कांग्रेस इन्दिरा के शासन ने जो कुछ बोया है और जिसके हिस्सेदार उस समय चव्हाण साहब थे, उसके साथ वर्तमान की परिस्थितियां उसका कारण बनी हैं।

जनता पार्टी ने ढ़ाई वर्ष में बहुत कुछ सुधारने की चेष्टा की है और अलाद्दीन का चिराग तो उपलब्ध नहीं है कि एक दम से सब बदल दिया जाये। मेरे मित्र श्री कंवर लाल गुप्त और डा० रामजी सिंह ने आंकड़े प्रस्तुत किए हैं, जो कांग्रेस के शासन में नहीं हो सका था, वह इन ढाई वर्षों के शासन में हुआ है, लेकिन इसके बाद भी आज के विरोधी आग में घी डालकर अशांति की ज्वाला को भड़काना चाहते हैं, इससे प्रजातंत्र खतरे में पड़ेगा। आज आप हमारे विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाना चाहते हैं, आज जनता भी आप सबके प्रति पूरी राजनीति के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव लाना चाहती है, अव्यवस्था का खतरा उत्पन्न हो गया है। इसलिए प्रजातंत्र को खतरे में पड़ने से बचाइये और प्रजातंत्र की व्यवस्था खतरे में है, उसके बारे में सोचिये, विचार कीजिये, और सम्यक रूप से सब मिलकर विचार कर कर इस अविश्वास प्रस्ताव को वापिस ले लें, इससे शांति भी बनेगी और प्रजातंत्र की स्थापना भी होगी।

श्री राज नारायण (राय बरेली) : श्रीमन्, नेता विरोधी दल ने जो अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित किया है, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हू और एक वाक्य में यह कहता हूं कि यदि प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई में तनिक भी राजनीतिक ईमानदारी हो, तनिक भी राजनीतिक निष्ठा हो, जनतंत्र के प्रति प्रेम हो और भ्रष्टाचार को आगे न बढ़ाने की इच्छा हो तो फौरन अभी त्यागपत्र दे दें।

मैं एक भी बात इधर-उधर से लेकर नहीं कहना चाहूंगा। मैं चाहूंगा कि यहां पर वही बात रखी जाये जो प्रमाणित हो, जो लिखित हो और जिसके विरुद्ध कभी भी मोरारजी भाई या उनकी ओर से कोई मुकदमा चलाना चाहें तो चला सकते हैं।

मैं सबसे पहले मोरारजी भाई की यह किताब छपी है गुजराती में, सम्पूर्ण गुजरात का दौरा करने के बाद मुझे एक किताब मिली और उसकी हमने फोटोस्टैट करवायी है, इसको अगर कोई और चाहेंगे तो और करवाकर बांट देंगे, इसका जो अंग्रेजी ट्रांस्लेशन है, उसको पढ़कर मैं सुनाता हूं। इस किताब का नाम गुजराती में है "आछे मोरारजी देसाई"—यह हैं मोरारजी देसाई।

"There was a communal riot in Godhara town of Panch Mahal District of Gujarat State in 1929-30. In this connection there was a departmental inquiry about the role played by Shri Morarji and after this inquiry, the following order was issued by the Revenue Department of Bombay State on 10th April, 1930, by letter No. 3307/D/28.

'Sub: Morarji Desai, his behaviour as a Government servant.

In this critical period Morarji Desai as sub-divisional Magistrate has failed miserably to perform his duty, and it is difficult to resist to believe that this failure of his, was due to his communal bias. Government takes a serious note of his guilt which, in ordinary circumstances, would lead to his miserable dismissal, but looking to his services of the last 10 years, the Government hesitates to take such a drastic step and therefore, it recommends that he should be demoted by five positions in the list of promotion of Deputy Collectors of the second rank'."

मैं इस सदन को यह समझाना चाहता हूं कि आज श्री मोरारजी देसाई और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गठबंधन क्यों है। इसके लिए यह किताब और यह घटना काफ़ी है। अंग्रेजी राज के समय उनके कैरेक्टर की जांच हुई। उस जांच की रपट प्रकट करती है कि फ्राम दि वैरी बिगिनिंग वह कम्युनल थे, और कम्युनल होने के कारण वह आज देश को जहन्नुम में ले जाने पर तुले हुए हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से गठबंधन करके इस देश को साम्प्रदायिकता के जहर से भर दिया है। इतना ही नहीं, मैं और पढ़ देना चाहता हूं।

Robert Payne, an internationally renowned historian, on page 629 of his famous book 'Life and Death of Mahatma Gandhi, writes on Morarji Desai:

"Morarji Desai was a man of considerable administrative talent, lean and hawk-faced with an intricate brain and a capacity for intrigue which he disguised under a mask of judicial calm. For eleven years he had been a Magistrate under the British. The characters of the scholar and the administrator were poles apart."

यह रपट भी कहती है कि श्री मोरारजी देसाई का दिमाग़ इनट्रिकेट है—वह साजिश और तिकड़म करने में कलाबाजी करता है, और इस साजिश और तिकड़म की कलाबाजी में आज देश रसातल को जा रहा है।

[श्री राज नारायण]

मैं श्री मोरारजी देसाई से करबद्ध प्रार्थना करूंगा कि हे मोरारजी भाई, आप रहें या न रहें, इस देश को तो रहने दें, यह देश तो सब का है, हम रहें या न रहें, लेकिन हमारा यह राष्ट्र तो बना रहे। मैं अपने भाई, श्री मोहन धारिया, से कहना चाहता हूं कि वह इस पर गम्भीरता से विचार करें कि आखिर मुल्क में हो क्या रहा है। कम्युनल रायट्स क्यों बढ़े हैं, क्यों साम्प्रदायिकता की अग्नि प्रज्वलित हो रही है, इस को विरोधी पक्ष और सत्ताधारी पक्ष के सभी माननीय सदस्य अच्छी तरह से समझें।

मैं चाहूंगा कि सदन की एक कमेटी टाटानगर जाये और जाकर देखे कि किस तरह की घटनायें वहां पर हुई हैं, किस तरह से साजिश हुई है और किस तरह ऊपरी कोशिश करके, समझौता कर के, दीनानाथ पांडे को 10 तारीख की रात को प्रोसेशन निकालने की अनुमति दी गई। क्या इस तरह से आप देश में साम्प्रदायिकता की फैलती हुई आग को रोक पायेंगे? जब ऊपर से इस तरह का काम होगा, तो इस तरह की घटनायें कभी रुकेंगी नहीं।

मैं अपने भाई और बुजुर्ग, विरोधी दल के नेता, श्री यशवंतराव चव्हाण, से निवेदन करना चाहता हूं—वह बहुत दिनों तक सरकार से सम्बन्धित रहे हैं—कि आखिर ये चीजें कहां छिपी हुई थीं। हमने पांच हजार किताबें छपवाई हैं। मैं हर एक एम० पी० से निवेदन करूंगा कि वह उस किताब को लेकर पढ़ें।

What does Gandhiji say about the RSS? Gandhiji says that 'they are like the Black Shirts, the Nazis and the Fascists....'.

मैं आज पूछना चाहता हूं अपने मित्र, श्री मोहन धारिया से, श्री जार्ज फर्नान्डीस से और श्री कुन्दू से, जो अपने आप को सोशिलिस्ट कहते हैं, कि जिस संस्था के बारे में महात्मा गांधी ने फासिस्ट, नात्सी और ब्लैक शर्ट जैसे शब्दों का प्रयोग किया, क्या वे उस संस्था के साथ मिल कर गवर्नमेंट चलायेंगे, उस संस्था के साथ गवर्नमेंट चला कर इस देश में जनतंत्र, जम्हूरियत और सैकुलरिज्म कायम करेंगे। (व्यवधान)

इसके बाद मैं सरदार बल्लभभाई पटेल के नोट के बारे में कहना चाहता हूं। पटेल जी ने कहा है:

"In the name of Hindu Rashtra, they want to create a Brahmin Rashtra, a Peshwa Rashtra."

वे यहां पर एक पेशवा राष्ट्र बनाना चाहते हैं। उनका कहना है कि अंग्रेजी ने राज्य लिया पेशवाओं से, इसलिए जब अंग्रेजी राज जाय तो पेशवा के हाथ में ताकत आए। मगर उनकी ताकत कम है इसलिए उनके हाथ में ताकत जा नहीं सकती, इसलिए उन्होंने हिन्दू राष्ट्र का नारा दिया। यह पुस्तिका हमारे पास मौजूद है, अभी 28 मार्च को नागपुर से यह पुस्तिका प्रकाशित हुई है जब कि रामनवमी का त्यौहार चलता है। इस में उन्होंने लिखा है—

"We believe in three Tatwas...."

और हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है, भगवा ध्वज ही हमारा राष्ट्र-ध्वज है। एकलाचलनुवत्तितत्। यानी एक का ही शासन चलेगा। जो कुछ नागपुर बोलेगा उसी को मानना पड़ेगा और भगवा ध्वज राष्ट्रीय-ध्वज है। क्या जनता पार्टी भी अब अपने हाथ में वह झंडा लेगी? एक राष्ट्रीय झंडा तिरंगा और अशोक चक्र है और एक यह भगवा ध्वज राष्ट्रीय झंडा होगा? यहां तक हम मान सकते थे यदि वह कहते कि भगवा ध्वज हमारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का झंडा है जैसे किसान सम्मेलन का झंडा है या जैसे मजदूर संगठनों का अपना झंडा होता है। मगर भगवा-ध्वज राष्ट्रीय ध्वज हो गया। शर्म आती है, लज्जा आती है। जवानी के तमाम अरमानों को हथेली पर लेकर हमारे नौजवानों ने जनता पार्टी का निर्माण किया सम्पूर्ण क्रांति को सफल करने के लिए! क्या सम्पूर्ण क्रांति को सफल करने का यही तरीका है? बहुत ही सफाई के साथ मैं कहना चाहता हूं कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मुसलमानों के बीच में नफरत पैदा करता है और मुसलमान और हिन्दू में नफरत पैदा कर के उसी नफरत के कीड़े से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पैदा होता है। हम लोग जो विरोध पक्ष में बैठे हैं चाहते हैं कि इस नफरत के कीड़े को साफ करें जिससे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का कीड़ा खुद मर जाय। क्या हमारे मोहन धारिया साहब इस में साथ देंगे? जार्ज फरनान्डिस इस में साथ देंगे? कुन्दू साहब साथ देंगे? किस दिन के लिए बैठे हैं? क्या जब देश रसातल को चला जायगा तब चेतेंगे? अभी बाकी है? हमने आदरणीय जयप्रकाश जी से जा कर कहा कि हम अब तक रुके थे, अब नहीं रुक सकते। जो कुछ हमने अलीगढ़ में देखा, जो कुछ और देखा उस के बाद अब रुक नहीं सकते। इसलिए मैं आज सफाई से कहना चाहूंगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर बैन होना चाहिए। इस में थोड़ी भी हिचक नहीं होनी चाहिए और अपने समर्थन में मैं जे० पी० को लाना चाहता हूं। श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा है —

In Shri Jayaprakash Narayan's speeches, there was strong condemnation of communa' organisations—Hindu Mahasabha and RSS and he demanded for their being banned.

जयप्रकाश जी ने कहा है कि इसको इल्लीगल करार दो और प्रतिबन्धित करो। फिर भी उन्हीं जयप्रकाश नारायण का नाम ले लेकर जो यहां चुनाव जीत कर आए हैं वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जूतियां साफ कर रहे हैं और उनके तलुवे चाट रहे हैं, उनके तलुवे चाट कर गृह मंत्री बनने की साजिश कर रहे हैं। इस तरह का काम नहीं होना चाहिए। जो सोच हो, वही बोल हो और वही तर्क हो। जब मनुष्य के सोचने, मनुष्य की बोली और मनुष्य के कर्म में मतभेद हो जाता है तो अनर्थ होता है। इस को मैं इतने पर ही छोड़ देता हूं।

हमारे पास एक और आइटम है यह है मिस्टर जे ए नायक की किताब-फाम टोटल रेवोल्यूशन टु टोटल फेल्योर। इन्होंने एक किताब लिखी है, उस किताब में यह लिखा है—

"Morarji Desai asked Nanaji Deshmukh to help him out of the situation. Raj Narain was to visit Simla and address a public meeting there. Nanaji contacted the Jana Sangh Chief Minister of Himachal Pradesh, Mr. Shanta Kumar and directed him to create an incident which might enable him to ease the Health Minister out of the Union Cabinet. The Jana Sangh Chief Minister fully co-operated with the Prime Minister in cooking out a case against Raj Narain which enabled the Prime Minister and the Party Chairman to avoid the Parliamentary Board's taking any action against Raj Narain."

Sir, I want to put this book on the table of the House with your permission. मैं आप से पूछना चाहता हूं Have you heard the name of any Prime Minister in the history of the democratic world who can conspire about his colleague in this way ?

इससे बढकर लज्जा और शर्म की बात और क्या हो सकती है?

रस भरा कनक घट जैसे, मन मलीन तन सुन्दर जैसे। मन तो मलीन ह लेकिन शरीर है सुन्दर जैसे सोने के घड़े में विष भरा हो। वह हैं श्री मोरारजी देसाई - इसको आप अच्छी तरह से समझ लें।

शायद हमारा समय जल्दी खातमे की ओर बढ रहा है इसलिए मैं बालसुब्रह्मण्यम के केस पर आ जाना चाहता हूं लेकिन उससे पहले एक बात की सफाई और करूंगा। शांति भूषण जी हमारे बीच में आ गए हैं जिनको मैं समझता था सेक्युलर हैं, डिमोक्रटिक हैं और एथारिटेरियन रूल के विरोध में हैं और आजीवन इस के लिए लड़ते रहेंगे। आज मैं उन से निवेदन करूंगा क्या श्री मोरारजी देसाई से बढ़कर कोई और एथारिटेरियन है? क्या श्री मोरारजी देसाई से बढ़ कर कोई दूसरा अधिनायकशाही है? इनसे बढ़कर अधिनायकशाही और कौन है?

श्रीमन् यह जनता पार्टी का कांस्टीट्यूशन है। इस समय तो जनता पार्टी स्पिलिट हो गई है दो भागों में एक जनता पार्टी (सी) और एक जनता पार्टी (एस)। हम लोग तो सेक्युलर हैं और जो भी हमारे साथ जाने वाले होंगे वे भी सेक्यूलर होंगे। सभी सेक्युलर इधर आ जायेंगे। तो इस कांस्टीट्यूशन के क्लाज (5) में लिखा हुआ है कि जो लोग जनता पार्टी के अलावा किसी दूसरी पार्टी के मेम्बर होंगे वें जनता पार्टी के मेम्बर नहीं बन सकते। अगर उस पार्टी का प्रोग्राम अलग है, उसका विधान अलग है तो वह डबल मेम्बरशिप मानी जायेगी जनता पार्टी के संविधान में इस बात के रहते हुए क्या आर0 एस0 एस0 के लोग इसके मेम्बर बन सकते हैं? जब हमारे इस सदन में कहा गया है कि 1 करोड़ 20 लाख रुपये इनकम टेक्स बकाया है तब पहले कहते थे कि हम कल्चर्ट-रल हैं।

You ask us: what is the meaning of culture. Can they define Hindu culture ? What is Hindu culture ? Ram is representative of Hindu culture: Krishna is representative of Hindu culture: Charawak is representative of Hindu Culture; Is Atal Behari Vajpayee representative of the Hindu culture ?

मगर आज उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति वह है जिसमें राजनीति, अर्थ नीति, समाज नीति और संस्कृति इन चारों का समावेश है। एक एफिडेविट दाखिल किया है 6 मार्च, 1978 को, वह सब हमने एक किताब में छाप दिया है, आप की आज्ञा हो तो मैं उसको टेबिल पर रख दूंगा। एफिडेविट, जिको हलफनामा कहते हैं, उसमें उन्होंने लिखा है कि हमारे बहुत से लोग केन्द्रीय कबिनेट में मिनिस्टर हैं, राज्यों में मिनिस्टर हैं फिर वे कैसे कह सकते हैं कि हम पोलिटिकल नहीं है? जब पालिटिक्स में घुसे हुए हैं तब क्यों कहते हैं कि हम कल्चरल हैं? आप दो जीभ से मत बोलिए। दो जीभ इनसान के नहीं होती है, दो जीभ सांप के होती हैं जो करता है लप, लप, लप और काट लेता है तो लहर नहीं आती है। मैं श्री मोरारजी भाई से कहूंगा कि दो जीभ न रखें, अगर काट लेंगे तो लहर नहीं आयेगी। इसलिए अगर आप देश को बचाना चाहते हों तो दो जीभ वाले प्रधान मंत्री श्री

[श्री राज नारायण]

मोरारजी भाई से इस देश का पिण्ड छुड़ाओ। हमारी यह फाइट मोरारजी देसाई से हैं। मैं आज आप के सामने डिक्लेअर करता हूं कि हमारी जो नई सरकार विरोधी दल के लोग बनायेंगें हम उसमें किसी पद पर नहीं रहेंगे, मंत्री मंडल में नहीं जायेंगे। मैं इस बात को आज डिक्लेअर कर रहा हूं.... (व्यवधान).... मैं तो पहली बार भी नहीं जा रहा था, बहुत ही आर्जू-मिन्नत के बाद गाया था। आदरणीय जय प्रकाश नारायण जी का लम्बा तार आया था, जिस में उन्होंने लिखा था—वह हम से उम्र में बड़े हैं—कि राज नारायण जी, मैं आप से प्रार्थना करता हूं, आप मोरारजी देसाई की गवर्नमेंट में शामिल होकर इसको चलाने में सहायक बनिये। चौधरी चरण सिंह जी ने कहा था कि राजनारायण जी नहीं जायेंगे तो मैं भी शपथ नहीं लूंगा। इन परिस्थितियों में हम चले गये। लेकिन एक-दो महीने के बाद ही डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल का नाम रखने के बारे में हमारा झंझट हो गया और तभी से हमने कहा कि हमें आज्ञा दीजिये। उस के बाद "ईश्वर राखा धर्म हमारा।" ईश्वर ने हमारा धर्म बचा लिया। कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमने जनता पार्टी को क्षति पहुंचाई है। अब देश जाने, समाज जाने, लोग जाने कि जनता पार्टी को नष्ट भ्रष्ट करने वाले, जनता पार्टी के चेहरे पर कालिख पोतने वाले—यदि कोई है तो मोरारजी देसाई हैं और उनको प्रधान मंत्री पद से हटाना होगा।.... (व्यवधान)...

श्रीमन्, अब मैं बालसुब्रह्मण्यम के मामले पर आता हूं। बालसुब्रह्मण्यम के मामले में अब वह खबरें आप के सामने आयेंगी कि आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे, यह गवर्नमेंट आश्चर्य चकित हो जायेगी।

श्री ज्योतिर्मय बसु (डायमंड हार्बर) : बाल सुब्रह्मण्यम को संजय | से बहुत सम्पर्क था।

श्री राज नारायण : संजय को तो हमने हटा दिया, अब हम इन को हटाने जा रहे हैं। मैं निवेदन करूंगा कि आप हमको बीच में मत टोकिए। मैं जनेश्वर मिश्र जी से निवेदन करूंगा वह इस्तीफा दे चुके हैं, थोड़ा हम को हमारे कागजों को खोजने में यहां आकर मदद करें।

श्रीमन्, ता० 4 को बालसुब्रह्मण्यम की बिल्डिंग पर रेड होती है। आप जज रह चुके हैं और कोई मामूली जज नहीं रहे हैं। ड्यूरिंग दि पीरियड जब कि जांच हो रही हो, इन्वेस्टीगेशन चल रहा हो, सर्च हो रही हो, क्या किसी जज ने इस तरह का स्टे आर्डर पास किया है? मान लीजिए, किसी को पता हो कि हमारे कमरे में कागज घुसा हुआ है, पुलिस वहां गई है तो क्या किसी जज ने ऐसा कहा है कि जांच नहीं कर सकते? वहां जांच हो रही है, एन्फोर्समेंट डिपार्टमेंट के लोग जांच कर रहे हैं और वहां पर आर्डर चला जाता है कि :

Stay. Do not proceed further. Is there any precedent in the history of the world ?

मैं उन जज साहब के विवेक पर आश्चर्यचकित हूं। मैं भाई शान्ति भूषण जी से पूछना चाहता हूं—वह जज कौन है, कब एप्वाइन्ट हुए ? शांति भूषण जी यहां लिस्ट रखें कि जजों की एप्वाइन्टमेंट कैसे हुई है, कौन कौन जज हैं, इन में कितने देसाई हैं और कौन हैं, तब पता चलेगा। साथ ही जो गोल्ड की चोरी हुई, सोना ले गये थे, वह सोना किस को बेचा गया, किस भाव पर बेचा गया और किन किन से खरीदवाया गया—यह पूरी सूची आनी चाहिये ? इसलिये मेरी मांग है कि बाल सुब्रह्मण्यम की जांच के जितने कागजात आये हैं, वे सारे के सारे कागजात सदन के पटल पर रखे जायें और सदन के सदस्य, सभी दलों के नेता उस की जांच करें, तब पता चलेगा कि इस में कितने फेसेज हैं। क्या उस में मोरारजी देसाई का नाम नहीं है—है। क्या उस में चांद राम का नाम नहीं है—है। क्या उस में अन्य मंत्रियों के नाम नहीं हैं—हैं। कान्तिलाल देसाई का नाम तो खूब है ही। कागज तो मिल ही जायेगा, कहां जायेगा। अब मैं एक लेटर यहां रख रहा हूं श्री कान्तिलाल देसाई द्वारा लिखा हुआ। यह श्री प्रेम भाटिया को उन्होंने लिखा था :

My dear Shri Prem Bhatia,

With reference to the conversation I had with you the other day regarding a firm known as 'Atul Drug House Ltd.' I am sending herewith copies of all the relevant papers regarding the company, including the agreement between the parties and also a copy of the resolutions passed by the African party to throw out the Indian party from the company. I shall be glad if you could kindly find time to study these papers and advise the African parties not to behave in a shabby manner which would generate ill-feelings in India. The Indian party has not done anything, which would compel the African party to remove the Indian party from the company.

इस के बाद और है। श्री कान्ति लाल देसाई, 5 डा० राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली। यह 1978 का है। यह फोटोस्टेट है। फोटोस्टेट इसलिये लाया हूं ताकि यह पता चल सके कि श्री कान्ति लाल देसाई, फ्रोम दि वेरी बिगनिंग श्री मोरारजी देसाई के कार्य में हस्तक्षेप करते रहे हैं, एडमिनिस्ट्रेटिव कार्य में हस्तक्षेप करते रहे हैं। यह उन की हॉबी है।

अब मैं आता हूं 19, जुलाई, 1978 के लेटर पर । इस से सारी बात का पता चल जाएगा । इन्होंने इन्कार किया है कि फ्रंकफर्ट में वे हम से नहीं मिले । मैं किसी बात को छिपाता नहीं हूं । बालसुब्रह्मण्यम् ने आज हम को लन्दन से फोन किया था और सारी हिस्ट्री को उन्होंने बताया और कहा कि आप कहिये सारी बातें पार्लियामेंट में । उन्होंने यह भी कहा कि अगर पार्लियामेंट हमारे प्राणों की रक्षा करे, तो मैं आ कर देश की रक्षा के लिये जितना करप्शन श्री मोरारजी देसाई और श्री कान्ति लाल देसाई का है, उस सब को बता सकता हूं । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि बालसुब्रह्मण्यम को देश में बुलाया जाए और वे देश में आ कर अदालत में सारी बातों को पेश करें ताकि पता चले कि करप्शन कितनी हाई डिग्री पर चली गई है । श्रीमन्, अब देखिए इस श्री कान्ति लाल देसाई के लेटर को । मैं नहीं जानता कि ये किरलोस्कर कौन हैं ? शायद श्री मोरारजी देसाई के समधी हैं और श्री कान्ति लाल देसाई के समुर हैं, फादर इन ला, आप समझ सकते हैं । इस में यह लिखा है :

My dear Dr. Stoll,

Thank you for your letter of the 10th of July, 1978. I am glad to hear that you are coming to India in September on a business trip. I will be very happy to see you here. I was in Frankfurt in the last week of June. Unfortunately I could not meet you due to preoccupations. I was told that there was some occasion in your house and you could not leave the house during those days.

Regarding your Pneumatic Project, I thought you were negotiating with Messrs Kirloskars, who are the biggest engineering firm in India. I am surprised to learn that you have negotiated with some African firm in Bangalore who are supposed to be your agents. Anyway, we will discuss the matter in detail when you come to India.

अगर जनतंत्र में कुछ ताकत हो, तो हाथ पकड़ कर प्रधान मंत्री को उन की कुर्सी से अलग कर दिया जाए ।

एक माननीय सदस्य : इस पर दस्तखत किस का है ?

श्री राज नारायण : श्री कान्ति लाल देसाई का । श्री कान्ति लाल देसाई ने यह चिट्ठी लिखी थी :

'My dear Dr. Stoll.'

मेरे पास फोटो स्टेट कापी है । हमारे सतीश अग्रवाल का यह मंत्रालय है । उनका सम्बन्ध आर एस एस से है । वित्त मंत्रालय (डिपार्टमेंट आफ रेवेन्यू) के एडीशनल सक्रेटरी एम रामचन्द्रन के नोट दिनांक 7-6-79 के कुछ उद्धरण मैं पेश करना चाहता हूं :

"In this note I wish to place on record certain events:

4-6-79 की सुबह चाय पर मैं मंत्री के साथ मीटिंग ले रहा था जैसा वे अक्सर दौरे से लौटने के बाद किया करते हैं । जब मैं अपने कमरे में लौटा तो मेरे निजी सचिव श्री एस आर सहगल ने सूचित किया कि प्रधान मंत्री जी के विशेष निजी सचिव श्री वी वाई टोनपे का टेलीफोन आया था कि जैसे ही मुझे फुर्सत मिले मैं उन से सम्पर्क करूं । जब मैं ने श्री टोनपे से सम्पर्क किया तो उन्होंने पूछा कि क्या मैं इनफोर्समेंट डायरेक्टोरेट का इन्चार्ज हूं और मेरे हां में जवाब देने पर उन्होंने जानना चाहा कि क्या श्री पी० एन० बाल सुब्रह्मण्यम की कोई तलाशी हुई ? मैंने सूचित किया कि मुझे याद आ रहा है कि कुछ दिनों पहले श्री पी एन बालसुब्रह्मण्यम के बारे में कुछ निश्चित खास सूचनायें मिली थीं और राय बनी कि उनके स्थान की तलाशी ली जाए । मैं ने श्री टोनपे को बताया कि वस्तु स्थिति की जानकारी कर के उन्हें रपट करूंगा ।

अब आप देखें कि टोनपे ने क्यों फोन किया ? प्रधान मंत्री के विशेष निजी सचिव ने जो सर्च हो रही है उस सर्च के बारे में उन से क्यों पूछा ? इसीलिए तो पूछा कि उसको प्रभावित करूं ? इसीलिए तो जज ने स्टे किया, आउट आफ दी वे जा कर स्टे किया ।

MR. SPEAKER: Kindly do not go into the character of a judge. It is not allowed.

श्री राज नारायण : शांति भूषण जी बैठे हुए हैं । ये कानून के पंडित हैं । मैं उन से पूछना चाहता हूं कि कानून के दायरे में क्या यह चीज आती है ? और भी आप देखें :

"on 8-6-1979, Shri Manchanda, Director of Enforcement reported that he received a call from Shri H. S. Shah, Joint Secretary in the Prime Minister's Office who stated that there has been a complaint from Mrs. Anand and that they would like to know the full details of this case."

काम है फाईनेंस मिनिस्टरी का, सतीश अग्रवाल साहब के डिपार्टमेंट का और उन के आर्डर से सारी कार्रवाई हो रही है लेकिन इसके बावजूद प्रधान मंत्री के सचिव आदि लोग तलाशी को रुकवा रहे हैं । क्यों ?

मुझे खुशी है कि मेरे भाषण के अन्तिम क्षणों में बाबू जगजीवन राम जी यहां आ गए हैं । ये हमारे पड़ौसी हैं । आरा और बनारस साथ

[श्री राज नारायण]

साथ लगते हैं । वह दिनकर जी को जानते हैं । दिनकर जी ने क्या लिखा था वह मैं बताना चाहता हूं । उन्होंने लिखा है कि कृष्ण ने दुर्योधन को बहुत समझाया लेकिन दुर्योधन नहीं माना । इस पर कृष्ण जी ने कहा :

ले अब मैं भी जाता हूं
अन्तिम संकल्प सुनाता हूं
याचना नहीं अब रण होगा
जीवन जय या कि मरण होगा
दुर्योधन तू भूशाई होगा
हिंसा का उत्तरदायी होगा

श्री मोरारजी देसाई को भी मैं यही कहना चाहता हूं । हे जनता पार्टी रूपी प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई जिस तरह से दुर्योधन भूशाई हुआ था उसी तरह से इस अविश्वास के प्रस्ताव पर तू भी भूशाई होगा और जो हिंसा होगी, जो जनता की अपार क्षति हुई है, उसकी आकांक्षायें धूमिल हुई हैं, उसकी आशायें निराशा में परिणत हुई हैं, उनकी सारी जिम्मेदारी तेरे पर जाएगी ।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और बैठ जाता हूं ।

श्री उग्रसेन (देवरिया) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय चव्हाण जी ने जो अविश्वास अस्ताव सरकार के विरुद्ध रखा है उसके विरोध में मैं कुछ कहने के लिए खड़ा हुआ हूं । "उम्र सारी तो कटी इश्के बुतां में मोमिन, आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमान होंगे ।"

अध्यक्ष महोदय, संस्कृत, में लिखा है 'संशय विनष्यति।' मैं जनता पार्टी के लोगों से कहना चाहता हूं कि हम रणस्थली में हैं अपने सिद्धांतों के लिये, अपनी लोकशाही के लिये, मानवीय जनतांत्रिक मूल्यों के लिये, जिसके लिये हमने सालों तकलीफ उठायी है । हमारे राम सागर मिश्र जैसे लोग जेल में मर गये कांग्रेसियों की, बुरा मत मानना चाव्हाण साहब वह दिन मुझे याद है जब उनकी लाश सामने रखी हुई थी, मैं चन्द्रभानु गुप्त को बधाई देता हूं, स्वर्गीय राम सागर मिश्र की लाश नहीं दी जा रही थी क्योंकि वह एम० आई० एस० ए० के प्रिजनर थे, लेकिन गुप्त जी ने लड़कर उनकी लाश दिलाई । और नेता जी आज कहते हैं कि उन्हीं लोगों के साथ मिल कर, जिनकी उस समय सरकार थी, हम नेशनल गवर्नमेंट बनायेंगे। कहां जा रहे हैं नेता जी? आज हम रणस्थली में हैं । आज सिद्धांतों की लड़ाई है, व्यक्तियों की लड़ाई नहीं है ।

माननीय नेता जी को हमारे प्रधान मंत्री से शिकायत हो सकती है । हमें भी बहुत शिकायत है । हमें शिकायत यह है कि प्रधान मंत्री जी ने बहुतों को मंत्री बना दिया लेकिन मुझे नहीं बनाया। हम जाते हैं प्रधान मंत्री के यहां तो अपोइंटमेंट लेते हैं । कहा जाता है कि 8 बजे आइये । हम जाते हैं तो समय समाप्त होते ही प्रधान मंत्री उठ कर खड़े हो जाते हैं कि समय समाप्त हो गया । मगर हमारे नेता जी जाते हैं, जो इधर से उधर चले गये, वह घंटों बैठ कर शिकायत करते हैं । मगर हमने कभी ऊफ नहीं किया । यह कैरेक्टर है । और मैं यह कहना चाहता हूं कि दुनिया के संसदीय इतिहास में उग्रसेन एक अपवाद है । पता नहीं जिन्दगी में क्या होगा ।

"अब न अगले वलबले हैं और न अरमानों की भीड़,
फक्त मर मिटने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है ।"

मैं कहना चाहता हूं जब एस० वी० डी० सरकार बनी, नेता जी मौजूद हैं, माननीय अनन्त राम जायसवाल बैठे हैं, मैं सोशलिस्ट पार्टी का नेता था, पार्लियामेंटरी बोर्ड के चेयरमैन मधु लिमये ने बुलाया, उन्होंने कहा यह पार्टी पावर में है, और जब व्यक्ति विशेष नेता मंत्री बनना चाहते हों, पार्लियामेंटरी बोर्ड ने उसे टिकट भी दे दिया हो और मंत्री न बनाया गया हो, तो वह मैं ही हूं । लेकिन मैंने कभी गाली गलौज नहीं की, मैं ने नेताओं की चाटुकारिता नहीं की, यह हमारा आचरण है ।

इसलिये आप पहली मई को याद करें। हम लोग आये थे, सम्मेलन हुआ था, मैंने खुद देखा कि नानाजी देशमुख के साथ माननीय राज नारायण जी मौहब्बत फरमा रहे थे । हमने जिन्दगी में कभी नहीं देखा था ।

मैं नानाजी को याद दिलाना चाहता हूं, नानाजी जब पहले पहले महाराष्ट्र से आये तो हमारी ससुराल के इलाके में आ गये, ग्रामीण अंचल में । वह हमारे परिवार से पूरे-पूरे परिचित हैं और हमारा बड़ा भात भी खाया है, कहने की जरूरत नहीं है, मगर हमारा कोई सम्पर्क नहीं था । लेकिन हमारे नेताजी साथ बैठते थे । मैं नेताजी से कहता था कि यह काम कैसे होगा, अपने मधु लिमये जी से कहता था तो कहते थे कि जरा नानाजी से बात कर लें । नानाजी ने मुझे कई बार खाने पर बुलाया, परन्तु मैं जा ही नहीं सका । नहीं गया । तो तब तो उनसे बड़ी मौहब्बत थी, लेकिन इस समय कौनसी बात हो गई जो कूचाएं इश्के में इतनी ज्यादा बेहयायी हुई कि दुल्लती चल गई और आप इधर से खिसक कर उधर चले गये ?

क्या कारण है, मैं वही कहता हूं । मैं कोई वाह-वाही के लिये नहीं कहता हूं, मगर बताता हूं कि इसका कारण क्या है, बहुत सोचना पड़ेगा । (व्यवधान) जब नेताजी बोल रहे थे तो हमने तो उन्हें टोका नहीं, अब जब हम बोल रहे हैं तो वह भी न टोकें ।

तो इसका सोचना है कि क्या गंभीर मामला है, कौनसी बात अब हो गई है, कौनसा झगड़ा पड़ गया ? मगर मैं बताता हूं कि जनता ने हमको भेजा, हमारी क्या हैसियत थी, जेल से छूटे थे, नेताजी ने और सभी ने बड़ी कोशिश कर के मुझे टिकट दिलाया । मगर हमारा टिकट इतना खराब था कि हमारे ही नेता लोग हमारा टिकट काटने लगे । मुझे टिकट दिलाया, मैं पार्लियामेंट में आया, मेरे वही कपड़े थे जो मैं जेल में पहने था और वही कपड़े पहन कर अपनी लड़की की शादी की । मेरे जेल में होने के कारण लड़की की शादी रुक गई थी । मगर यहां पर हमने कहा कि जम्हूरियत को बचाना है, जनतंत्र को बचाना है, इस इन्दिरा गांधी की कांग्रेस को हटाना है इसलिये किसी से भी एकता करना हो तो कर लें । खासकर उनके साथ जो जेल में थे और हमारे साथ थे । जिन्होंने हमारे साथ लाठी खाई । श्री रवीन्द्र किशोर शाही हमारी पार्टी के नहीं थे वह जनसंघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष थे । हमारे साथ जेल में थे, जेलर ने बेड़ियां डालकर घायल कर दिया, हम लोग जेलर पर टूट पड़े । इसलिये नहीं कि वह जनसंघी थे, इसलिए नहीं कि हमारे इलाके के थे । बल्कि इसलिये कि वह समान धर्मी थे, समान तरीके से मार खाते थे, अन्याय की बात पर हम लोग टूट पड़े । हम उनके साथ आये ।

आप आर० एस० एस० की बात कहते हैं, आर० एस० एस० के हम भी बड़े विरोधी हैं, मगर आज क्या है ? मैं सभी से कहना चाहता हूं कि मोरारजी भाई बहुत ख़राब हैं, हमने कहां कोई सर्टिफिकेट दिया है कि बहुत अच्छे हैं । हमने तो जय प्रकाश नारायण के चरणों में रह कर सियासत सीखी है । पहले मैं टैरेरिस्ट मूवमेंट में काम करता था, डा० लोहिया के बीच बगल में बैठकर वालेन्टियर की हैसियत से राजनीति में काम करता था । हमारे गुरू नरेन्द्रदेव जी थे और उन्होंने जो भाषण किया, वह मैं यहां आज नेताजी को सुनाने के लिये लाया हूं ।

31 मार्च, 1948 को जब हमारे गुरु आचार्य नरेन्द्रदेव ने नासिक सम्मेलन के बाद, मैं तो कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से 1947 में ही अलग हो गया था, मेरा विचार था कि कांग्रेस कुछ करने वाली नही है । मगर कानपुर सम्मेलन में हमारी पार्टी रह गई, मैंने कहा कि अलग पार्टी बनाओ और पार्टी बनाने के बाद नासिक में सब इकट्ठे हुए । हम लोग भी एक सोशलिस्ट पार्टी में आये, सभी ने कांग्रेस छोड़ दी । मैं दो शब्द कहना चाहता हूं, आदर्शों की बात आप करते हैं, कौन आदर्शों को लेकर आज आप इधर से उचक कर उधर बैठ गये ? आपके कौन से आदर्श हैं ? आपके सामने की बात है । आचार्य जी ने 12 विधायकों को लेकर पार्लियामेंट में भाषण किया, वह भाषण मेरे हाथ में मौजूद है मैं उसमें से एक-दो लाइनें पढ़ूगा । भाषण के बाद कहा कि आपसे बहुत मोहब्बत है पंडित जी, बहुत दिन इस घर में रहे । अब चुनाव में जायेंगे हो सका और आपका आर्शीवाद रहा तो आपके इस विधान भवन के कौने में अपनी कुटिया बनायेंगे । लेकिन नहीं आये । उन दिनों मैं बम्बई से आया था, कोई मेरी पहचान नहीं थी । सब के सब हार गये, लेकिन एक आदर्श था ।

डिफेक्शन की बात आप करते हैं, आदर्शों की बात करते हैं आज जितने हमारे लोग अलग हुए हैं, श्री श्याम नन्दन मिश्र से लेकर श्री रामनरेश कुशवाहा तक जो हमारे जिगर के टुकड़े हैं, आप सब इस्तीफा दे दीजिए, आजाइये चुनाव में और आपके खिलाफ जब हमारे लोग खड़े हों, तो उनको हराकर फिर आजाइये और फिर सरकार बनाइये । मैं उन में से हूं । . .

MR. SPEAKER: Now we will start it after lunch.

(*Interruptions*)

SEVERAL HON. MEMBERS: Let him finish it.

(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: No, no. The House stands adjourned for lunch till 2 O'clock.

13 hrs.

The Lok Sabha adjourned for Lunch till Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after lunch at Fourteen of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

MOTION OF NO-CONFIDENCE IN THE COUNCIL OF MINISTERS— *contd.*

श्री उग्रसेन: उपाध्यक्ष महोदय, अभी पहले मैं उस ऐतिहासिक डाकूमेंट से कुछ लाइनें पढ़ना चाहता हूं जो मेरे गुरू आचार्य नरेन्द्रदेव ने 31 मार्च, 1948 को उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्यता से अपना और अपने 11 और साथियों का इस्तीफा देते हुए पढ़ा था । उसका केवल एक अंश ही मैं पढ़ना चाहता हूं । नासिक सम्मेलन सोशिलिस्ट पार्टी का हुआ, उसके बाद सोशलिस्ट पार्टी कांग्रेस से अलग हो गई । उस समय आचार्य जी ने अपने दोस्तों से यह कहा कि जब हम कांग्रेस से अलग हो गये हैं तो हमारा यह नैतिक आचरण है कि हम इनके टिकट को भी वापस कर दें और इनके पद को भी वापस कर दें । यह पढने के बाद उन्होंने विधान सभा की सदस्यता से अपना इस्तीफा दे दिया था ।

[श्री उग्रसैन]

उन्होंने जो लिखित वक्तव्य पढ़ा था उस का एक अंश म पढ़ना चाहता हूं। यह 31 मार्च, 1948 की उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्यवाही से उद्धृत कर रहा हूं:

केवल साम्प्रदायिकता का विरोध करने से जनतंत्र की स्थापना नहीं होती।..... कुछ जनतांत्रिक मूल्य हैं कुछ मानवीय आदर्श हैं। एक बात। दूसरा अंश पढ़ना चाहता हूं। आचार्य जी ने कहा—

"हम संतप्त हृदय से अपना पुराना घर छोड़ रहे हैं किन्तु जो अपनी पैतृक सम्पति है उससे हम दस्तबरदार नहीं हो रहे हैं। यह सम्पति भौतिक नहीं है। यह आदर्शों तथा पवित्र उद्देश्यों की सम्पति है। इस सम्पति का उत्तराधिकारी न केवल ज्येष्ठ पुत्र होता है और न इस रिक्थ का सम विभाग ही होता है। धार्मिक समुदायों का पर्सनल ला अर्थात् व्यक्तिगत विधान इस पर लागू नहीं होता। इस सम्पति का दावेदार वही हो सकता है जो अपने आचरण और विश्वास से अपने को उसका अधिकारी सिद्ध कर सके।

मैं अपने मित्रों से यह कहना चाहता हूं कि यदि आप उन आदर्शों को, जिनको लेकर के जनता पार्टी में आए थे, आज उधर चले गए तो उनको भी साथ ले गये तो आप को अपने आचरण से और अपने व्यवहार से जनता के सामने इसे साबित करना पड़ेगा कि कौन सी परिस्थिति आज पैदा हो गई कि अपने पुराने घर में आग लगा कर नया महल बनाने चल पड़े? यह जनता आप से पूछेगी और आप को इस का जवाब देना पड़ेगा।

मैं बौद्ध फिलास्फी का बहुत बड़ा कायल हूं। कुशीनारा मेरे ही निर्वाचन क्षेत्र में पड़ता है। मैं कुशीनारा निर्वाचन क्षेत्र को रेप्रेजेन्ट करता हूं। महात्मा बुद्ध ने लिखा है कि "जातं मा पुच्छ, चरणं च पुच्छ।" जाति मत पूछो, आचरण देखो। इसीलिए मैं श्री ओम प्रकाश त्यागी के रेलिजन बिल का विरोध करता हूं। मैं आप से कहना चाहता हूं कि जनता पार्टी जिसको हमने बनाया उसमें कुछ व्यक्तिगत झगड़े से, लड़ाई से और आपस के लेन देन के मामले में नाराज होकर उधर चले गए तो आपको इसके लिए जनता को जवाब देना पड़ेगा।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे गुरु डाक्टर लोहिया ने गैर कांग्रेसवाद की हवा चलाई थी 1967 में और आज 9 प्रदेशों में चव्हाण साहब की कांग्रेस ध्वस्त हो गई। हमने भी एस वी डी की गवर्नमेंट चलाई है, मैं फार्मेशन पार्टी का सेक्रेटरी बनाया गया था हम विधायकों ने चौधरी साहब को मुख्य मंत्री बनाया था लेकिन हमने उनको गिराने में पहल नहीं की। मैं बताना चाहता हूं, यह इतिहास है, अगर चौधरी साहब बोलते तो मैं कहता कि कह डालिये कि हमारे नेता राजनारायण जी ने गिराया था। (व्यवधान) यही नहीं, राम नरेश कुशवाहा जी ने जो मंत्री थे, अब एम० पी० हैं उनसे किताब लिखवाई—'चरण सिंह नहीं, चेयर सिंह'। आप चौधरी साहब से पूछें कि वे उग्रसेन को क्या समझते हैं और राजनारायण को क्या समझते हैं? आज राज नारायण की जरूरत है, यह बात दूसरी है लेकिन हमारी भी जरूरत होगी।

राज नारायण जी से एक पत्रकार ने पूछा कि आप कौन हैं, राम हैं या हनुमान हैं तो उन्होंने कहा कि हनुमान है। अखबार वाले ने मुझ से कहा कि वे तो बड़े सशक्त नेता हैं, वे कहते हैं कि राम नहीं हैं, हनुमान हैं तो मैंने कहा कि उसमें एक लाइन और जोड़ लेना कि राज नारायण जी वे हनुमान हैं—यह इतिहास में लिखा जाना चाहिए—जिनके इष्टदेव बराबर मतलब से बदला करते हैं। (व्यवधान) इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इतिहास, क्रांतियां, परिवर्तन, तूफान ऐसा नहीं है कि

God said, let there be light and there was light.

ऐसा नहीं है कि अल्ला मियां ने कहा और वह हो गया।

राज नारायण जी रामायण की बड़ी चर्चा करते हैं हमने तो रामायण ज्यादा पढ़ी नहीं है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम इसलिए कहा गया कि उन्होंने कुछ करके बतलाया लेकिन बालि का हनन करने में उनसे भी कमजोरी हो गई, उनसे भी मर्यादा का हनन हो गया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम भगवान नहीं थे। अगर आप रोज उनका पाठ करते हैं, माला पहनते हैं और दो घंटे पूजा करते हैं, पत्थर पूजते हैं तो आप राम की मर्यादा को भी निभायें। आज मैं दावे के साथ कह सकता हूं मेरे मित्रों हालांकि सियासत में पेशीनगोई करना मुश्किल है, कि अगर आपके कुकर्मों से जनता पार्टी टूटी तो यह देश टूट जायेगा, जनतन्त्र टूट जायेगा। (व्यवधान) मैं तो कुछ भी नहीं हूं, बहुत नाचीज हूं, मेरी कोई हैसियत नहीं है, मैं तो नेताओं का झंडा उठाता हूं लेकिन लालू, उग्रसेन की जिन्दगी की रात बिस्तरा बिछाते ही बीत गई, सोने की नौबत नहीं आई मैंने बम्बई की गलियां में घूमकर पांच साल काम किया है और वहां से लौटकर पूरब में आया तो अपने लिए गालिब का एक शेर कहा करता था:

"है कोई ऐसा भी जो गालिब को न जाने
शायर तो बहुत अच्छा है मगर बदनाम बहुत है।"

लोग मुझ से बुरा मान जाते हैं, मोरारजी भाई भी बुरा मान जाते हैं, राज नारायण जी भी बुरा मान जाते हैं, क्योंकि मैं सब के पास जाने का आदी नहीं हूं । मैं सिद्धान्तों का आदी हूं । हम से भी गल्तियां हो सकती हैं । जनता पार्टी की ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनसे मैं बिल्कुल इत्तिफाक नहीं करता । मैं ट्रेड यूनियन मूवमेंट का आदमी हूं । मगर मेरा आप से कहना यह है कि जनता पार्टी की सरकार को आप बचाइये, आप उधर चले गये, कोई परवाह नहीं, आप वहीं बैठिये, लेकिन वोट हमारे साथ दीजिये ।

आप सोचिये–आप क्या बनाये हैं ? हम ने भी डेमोक्रेसी की परिभाषा पढ़ी है । वह परिभाषा क्या है–

"Rule of the people, for the people, by the people."

लेकिन आप क्या बना रहे हैं—

"Rule of the defectors, for the defectors, by the defectors".

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बचपन में मास्टरी किया करता था । बम्बई में जब खाने पीने की दिक्कत हुई तो यह करना पड़ा, क्योंकि डिग्री या डिप्लोमा मेरे पास नहीं था, 1942 की क्रान्ति में पुलिस सब उठाकर ले गई थी । मैं अपने इन साथियों से कहना चाहता हूं कि डेमोक्रेसी की परिभाषा को मत बदलो । सब से बड़ी तकलीफ-देह बात यह है कि "गैर-कांग्रेस की बात चलाने वाले मेरे मित्र राज नारायण जी आज चह्वाण साहब कांग्रेसी के साथ जाकर मिल गये हैं ।" क्या कहूं, बहुत सोच समझ कर बोलना पड़ता है –मेरे मित्रों की सेवा में यह शेर अर्ज है—"यह इश्क नहीं आसां"—वर्मा जी, जरा ध्यान दें, यह आप के लिये भी है और चन्द्र शेखर, मेरे जिगर के टुकड़े, लख्ते जिगर जरा सुनो–

"यह इश्क नहीं आसां", बस इतना समझ लीजे, यह आग का दरिया है और डूब कर न जाना है ।"

यह जिगर मुरादाबादी का शेर है ।

जनता पार्टी की मुहब्बत इतनी आसानी से आप को जाने नहीं देगी । . . . .

श्री चन्द्रशेखर सिंह (वाराणसी) : समुद्र का पानी डाल देंगे ।

श्री उग्रसेन : पूर्वांचल की रूठी हुई दुल्हन की तरह चले गये और सैंया जी मनाने को गये ।

मैं जनता पार्टी की उपलब्धियों को गिनाना नहीं चाहता . बहुत से लोग पहले ही गिना चुके हैं, हम ने लोकतन्त्र को स्थापित किया है। हमने न्यायपालिका की गरिमा को बढाया है, 27 महीनों में जितने गलत लोगों पर मुकदमे चलाये गये, उन को वापस लिया, 51 लाख एकड़ जमीन में सिंचाई की व्यवस्था की, 1 करोड़ 70 लाख एकड़ में 5 वर्षों में सिंचाई की व्यवस्था का लक्ष्य है, 13.5 करोड़ टन अनाज का उत्पादन हुआ–क्या यह सब गलत काम है ? हमने एक हजार करोड़ रुपये प्रति वर्ष के हिसाब से विदेशी मुद्रा बढ़ाई । हमारे यहां पहले साढ़े-तीन हजार करोड़ की विदेशी मुद्रा थी, जो अब 6 हजार करोड़ है । अगली पंचवर्षीय योजना में 30 हजार करोड़ रुपया हम गांवों के विकास और खेती पर लगाने जा रहे हैं । पिछली कांग्रेसी सरकार ने पांच पंच वर्षीय योजनाओं में जितना रुपया लगाया , उसका डेढ़ गुना हम लगाने जा रहे हैं । औद्योगिक विकास में देखिये—हमारे उद्योग मंत्री ने पिछले दो वर्षों में 60000 लोगों को कालीन उद्योग के लिए ट्रेनिंग दी । हमने वायदा किया था कि बेरोजगारी को 10 वर्षों में मिटा देंगे—हमारे मोरारजी भाई ने इस तरह की घोषना की थी–क्या हम उस तरफ आगे नहीं बढ़ रहे हैं ?

मैं अब इन सब बातों में नहीं जाना चाहता, लेकिन एक बात कहना चाहता हूं – आज आप को जनसंघ बुरा लग रहा है । लेकिन मैं आप से पूछता हूं—नाना जी, बुरा मत मानियेगा , जिस दिन चार स्टेट्स राज नारायण जी ने ले लिये और 4 स्टेट्स नाना जी, ने ले लिये तो क्या हम से पूछा था ? जब मैंने अपने नेता से पूछा मैं नेता जी का नाम नहीं लूंगा—क्या हमारा भी कुछ हिस्सा है, क्या हम भी चौकीदारी करेंगे, तो हमारे दोस्त ने कहा–तुम्हारी हैसियत क्या है? जब तक नाना जी, आप को देते रहे, तो वह अच्छे थे, जब देना बन्द कर दिया, तो बुरे हो गये ? इस का कोई जवाब आप के पास नहीं है ।

अन्त में, उपाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं, इतना ही कहूंगा कि जनता पार्टी के घोषणा-पत्र में जो वायदे किये गये हैं—राइट–टु वर्क का वायदा है, विकेन्द्रीकरण का वायदा है, लोगों को रोजगार देने का वायदा है, सम्प्रदाय विरोधी और धर्म निरपेक्ष राज्य के वायदे किये हैं, उन को जनता सरकार को पूरा करना पड़ेगा । हमने जनसंघ के नेताओं से बातचीत की, तो उन्होंने कहा कि हम सब तैयार हैं पर क्या घुटने टिकवा कर आज ही सब करवा लोगे । हमने कहा कि हमारा यह मतलब नहीं है । लोहिया जी कहते थे कि एक मुंह के अन्दर दो जीभ नहीं होतीं, इसलिए दो जबान मत करो । वे कहते थे कि गोली की इज्जत नहीं होती बल्कि बोली की इज्जत होती है । इसलिए जीभ का आदर करो । धर्म-निरपेक्ष राज्य बनाने का हमने वादा किया है और महात्मा गांधी की समाधी पर हमने कसम खाई है । आज उस कसम को भूलगये ? उस को मानना ही पड़ेगा हम को भी । आज जैसी देश की हालत जा रही है, उस में नये सिरे से नई उमंग से और नई रोशनी में इस सरकार को काम करने का मौका दो । मैं राज नारायण जी को धन्यवाद देता हूं और उन्होंने इस समय ऐसा चित्र उपस्थित कर दिया कि सब का ध्यान उधर चला गया और मैं अपने मित्रों से अन्त में यह कहना चाहता हूं कि अभी उधर बहुत फिटफाल्स हैं, बड़े खतरे हैं । वे अभी सरकार नहीं बना पायेंगे । अगर आप चाहते है कि तानाशाही प्रवृत्ति का नाश हो, तो इस अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन न करो ।

मैं एक बात बीच में कहना भूल गया था और वह यह है कि आज आप यह देखें कि एशिया में फिलपीन्स से

[श्री उन्नयन]

अल्जीरिया तक कहीं भी जमहूरियत नहीं है। केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जहां पर जमहूरियत का एक्सपेरीमेंट हो रहा है और बाकी सब जगहों पर तानाशाही है। इसलिए अल्लाह के नाम पर, भगवान के नाम पर, खुदा के नाम पर और हनुमान के नाम पर कम से कम भारत के जनतन्त्र को और जनता पार्टी को इस समय ठोकर मत मारो। और स्टीफन साहब मैं आप को कहता हूं कि अगर नेशनल गवर्नमेंट बनेगी, तो राष्ट्रपति किसका बनेगा, यह आप भी जानते हैं। मैं यह मानता हूं कि स्टीफन साहब का विश्वास जमूहरियत में है। मैं यह भी जानता हूं कि श्री उन्नीकृष्णन का विश्वास जम्हूरियत में है और हमारे लकप्पा साहब और श्री वयालार रवि का विश्वास भी जमहूरियत में है। वे किसी जमाने में हमारे साथी थे मगर धोखे से इधर से उधर चले गये। खैर, हम को इस की कोई परवाह नहीं है मगर जो बातें उन्हों ने कही हैं, मैं उन का आदर करता हूं। इसलिए मैं यह कहूंगा कि जनतन्त्र को बचाने के लिये जमहूरियत को बचाने के लिए और इस देश की 65 करोड़ त्रस्त मानवता को बचाने के लिए, चह्वाण साहब ने जो अविश्वास का प्रस्ताव रखा है, उस को गिरा दो और जनता पार्टी को मौका दो कि वह नई उमंग, नये जोश और जो आपने तकरीरें की हैं, उनसे नसीहत ले कर, जनता की भलाई का काम करें।

जहां तक मेरा प्रश्न है और मेरे जैसे सोचने वालों का प्रश्न है, मैं आप से साफ कह देता हूं कि हम ने अभी 4 जून को अपने कन्वेन्शन में इस बात का फैसला किया है कि हम जनता पार्टी में रहेंगे लेकिन हमारे जो सिद्धान्त हैं उन के अनुसार हमारी जो मांगे हैं, उन को मनवाने के लिये और घोषणा-पत्र को लागू करने के लिये हम जी तोड़ लड़ेंगे और एक जगह हिन्दुस्तान के समाजवादी जुटेंगे और निर्णय करेंगे और कांटों भरे जंगलों की राह भी हम को नहीं रोक सकती।

इन शब्दों के साथ मैं चह्वाण साहब के अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

SHRI VASANT SATHE (Akola) : Sir, I want to take this opportunity today on this No-Confidence Motion to bring to the kind notice of this House through you an even more basic malady which is plaguing this country. I am sure that all of you are aware that the seriousness of the problem will not be limited only as to whether this Government is going to last and how long and which force is going to take over. That is not the question.

After the traumatic experience of the emergency, we thought that one good thing that emerged was that for the first time a two-party system on the basis of parliamentary democracy came into existence. We had sincerely hoped, and I was one of them that at least now the newparty will try to consolidate the parliamentary democracy, because that itself will be a great boon to this country. But what happend was that the new party instead of trying to consolidate itself, started on non-issues, disintegrating itself, quarrelling among itself and became unstable. And no party which is not itself stable can provide a stable government to the country. So, the biggest and the most important thing was that the Janata Party should have been stable in itself. I hope the no-Confidence Motion at least gives them an opportunity for introspection, They are forgetting one thing.... (*Interruptions*) This man, Shri Jyotirmoy Bosu, was enjoying the second honeymoon in the Jaipur Jail. He is the last man to have any right.....

(*Interruptions*)**

SHRI VASANT SATHE : What is important in this country is a stable government.

SHRI C. M. STEPHEN (Idukki) : A Captain of the Britsih army, what more can he do ? A paid agent of the multi-national.

(*Interruptions*)**

SHRI VASANT SATHE : I want to draw the attention of the country through you and through the House... (*Interruptions*)**.

MR. DEPUTY-SPEAKER : All the interruptions will go out of record. Let me remind the members that there should be some seriousness in the discussion There is hardly much time and Shri Vasant Sathe has only 15 minutes. Let him say what he wants to say within that time.

SHRI VASANT SATHE : I did not utter a word to distrub them. Right from the beginning they started the distrubance. Kindly take note of that. I was saying something more serious.. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr Jyotirmoy Bosu, please keep quiet now.

SHRI K. S. CHAVDA (Patan) : It happens because every Member addresses the Member and not the Chair. If they do so, it will happen like that.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You had better address me.

SHRI VASANT SATHE : I was inviting your attention to the fact that unless we think of this basic problem of providing a stable government by a stable

**Not recorded.

party., the whole faith in the democratic system and parliamentary system will get eroded and what is happening and what has happened with the Janata Party is that unfortunately right from the beginning there is the story of lost opportunity an excellent opportunity which they have got to stabilise on basic issues, to tackle the fundamental problems of poverty of the people. That they lost. If they have consolidated and tried to concentrate on the socio-economic problems of the people which have recently been highlighted by the group meeting of the socialists in the Janata Party, if right from the beginning the Janata Party had concentrated on those problems instead of bewailing about the non-issues in this country, I think the picture would have been different today. But, unfortunately, that was not so. They thought that they came on a negative vote. Having come on a negative vote to be in power, to remain in power, they thought they must use the same negative aspects and continue. I have no quarrel with them But then they have so soon brought it to a stage that the same venom which they were trying to pour out came home to roost, and they see the picture today. It is no use trying to give statistics this way or that way. What is the picture obtaining in the country ? The 'picture is that people are losing faith in this government. Leave alone ordinary things, even the law and order situation in the country is creating panic in the minds of the people. There is a very serious danger to the economy . You talk in terms of 'all is well with the economy', and friends throw statistics. They talk of excesses committed by our government in the past, but just look at one simple example of what the Comptroller and Auditor General has to say in his latest report.

SHRI SURAT BAHADUR SHAH (Kheri) : Why does Mr. Sathe who can speak loudly lower his vocal chord ? He shouts and squeaks at the wrong moment.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Please take your seat and don't distrub the proceedings. It is well-recorded, it is O. K. Don't unnecessarily create trouble. He is going on with his speech and you come out with a remark about his vocal chord. If you are not able to hear, I can't help it.

SHRI VASANT SATHE : The point made in the Comptroller and Auditor General's Report is that the number of searches and seizures conducted in 1977-78 were not only the lowest in the last few years reversing the trend of earlier years, but that the fall in the recoveries was drastic.

"The figures of recoveries through the searches and seizures are :

1975-76	Rs. 3,683 crores
1976-77	Rs. 3,571 crores.
1977-78 it has slumped to	Rs. 617 crores."

SHRI DINEN BHATTACHARYA (Serampore) : Which paper you are reading ?

SHRI VASANT SATHE : This is *Financial Express* dated 3rd July. Now what does this show ? From whom were these recoveries made ? Not the ordinary man, not the poor man, but the smugglers, the rich people, hoarders and those who have unaccounted wealth, and Rs. 3,600 crores—the entire deficit that you would have in addition to what deficit you have already declared, all that could have been made up by these recoveries from these big fellows. Whom are you sheltering?

The same report says that the tax arrears have gone up in 1977 by Rs. 361·48 crores. What have you to say to this? Therefore, let us not go on saying that all is well with the economy of this country. The Prime Minister seems to think that all is well. Whenever you raise this question, he says : "Don't go by the newspapers. Newspapers are exaggerating. All is well. God is in His heaven, and I am the Prime Minister. Therefore, everything is all right." If this complacency, smugness, is to be there, then nobody would ever be serious about the problems of this country.

I beg to submit that the problems are serious., that if we do not wake up in time, the country's unity will be in danger, the country's integrity will be in danger. I am telling you that if people lose faith in the democratic institutions, what will be the casualty ? All around, in this sub-continent and elsewhere, wherever democratic institutions lost their credibility, the temptation was for the military to take over. If military—— comes, leave alone democracy, the whole unity of this country will be in danger. No military can hold this sub-continent of a nation together. And since when have you been a nation ? Only for 30 years. What do you think will happen

[Shri Vasant Sathe]

to the unity of this country if either the military or any other para military attempted to take over this country. I beg of you to consider the danger.

In this country there is a serious danger in your entire northeastern border with those who have extra-territorial territory. They will, if the day arises, have a civil war, and cut off the country in the name of a big alliance. In the south, do you think the military can do all that you have to do on the linguistic issue? Somebody raises a call to beware of Hindi imperialism and you lose the south.

Therefore, I am trying to tell you that the unity of this country is in danger because of the politics of non-issues. What are the priorities of the present Government ? This party tried to push up Hindi by terrorising the people of the south. They bring a Bill. I told my friend Tyagiji : "You have brought a Bill which, with one stroke, has created fear in the minds of the Christian minorities". And mind you, in a very sensitive region in the northeastern sector, There they are today in Government and in a substantial majority. Why do you want to do all these things, I would like to ask.

Same thing about the Muslim minority. My friend Shri Kanwar Lal Gupta tries to give statistics. In one incident you killed 100, and then in the past so many hundreds were killed in totality. Is this the way an argument is to be made? The question is : what is the weight in the minds of the minorities, the Harijans, the Girijans, the young student community, the working class or any other class. The reason is that my friend George Fernandes and other colleagues had, when the were in the opposition, not knowing that they would come to power very soon, raised hopes in all classes, all their demands were supported. Today, with what face can you tell the working class, inflation or no inflation, economic pressure or no economic pressure, not to demand bonus, not to ask for CDS return ? Therefore, the time has come when I beg of you and the House to consider matters seriously.

It is all very well to say that this Government willfall. I have no doubt that it will not last long, but what is the alternative ? I do not believe in this third force nonsense. Ten laymen together do not make one good man. Two Rotten eggs do not make even one good omelet. What are they talking of the third force? The question is : have they inspired any confidence in the mind of the people of this country by their actions ? They are quarrelling all the time. I agree with the President. Although President's name should not be mentioned in the House, I am saying this because it is non-controversial.The time has come—you are talking of national summits—when we should have a national summit of all those who have any love for the country and who command respect; right from Sheikh Abdullah to Namboodiripad and Jyoti Basu, you should bring all of them together in a national summit and think of a programme for twenty years, which should be achieved by the turn of the century. Have a socio-economic national programme as the target and then judge the parties by performance and implementation of that programme. Can't this much be done by these people, by this nation ? Can't people expect this much from all these leaders ? I believe that every person is a patriot and has patriotism in his heart. I appeal to you—— If you don't like Mrs. Gandhi, alright she can take care of herself, you can throw her in jail—but the rest of you, come together in a national summit and solve the problems of this country. That is the least the poor people expect from you.

With this, I support the motion because this is a Government which is losing time on non-issues.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Sikandar Bakht to make a statement.

14.37 hrs.

STATEMENT *RE.* DISRUPTION IN SUPPLY OF DRINKING WATER IN DELHI

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND SUPPLY AND REHABILITATION (SHRI SIKANDAR BAKHT) : The employees of the Delhi Water Supply and Sewage Disposal Undertaking went on strike on the evening of 11th July, 1979. The facts regarding the strike, as ascertained from the Municipal Corporation of Delhi, are that the demands of the Delhi Jal Mal Karmchari Sangh, mainly regarding wage rise of 66% and other benefits including reservation of posts for the children of the serving employees of the Undertaking, were served on the Municipal Corporation Delhi on the 11th June 1979 and the matter was, thereafter, referred for conciliation to the Labour Commissioner. The employees originally proposed to go on strike from the 28th